प्राकृतिक रंगों के लिए पर्यावरण की देखभाल और समझदारी से संग्रह

अवलोकन

नेचुरल डाइंग सीधे जंगलों, पौधों, पानी, मिट्टी और क्लाइमेट पर निर्भर करती है। अगर इकोसिस्टम खराब होते हैं, तो डाई के रिसोर्स कम हो जाते हैं। इसलिए, कारीगरों को न सिर्फ डाई निकालनी चाहिए–बल्कि इकोसिस्टम को ज़िम्मेदारी से मैनेज भी करना चाहिए।

यह मॉड्यूल इकोसिस्टम के काम करने के तरीके को समझने में मदद करता है और पार्टिसिपेंट्स को बायोडायवर्सिटी कंजर्वेशन और क्लाइमेट रेजिलिएंस के साथ जुड़े सस्टेनेबल हार्वेस्टिंग तरीकों की ट्रेनिंग देता है।

इस प्रशिक्षण का उद्देश्य

- समझना कि जंगल और पर्यावरण कैसे काम करते हैं
- यह जानना कि स्वस्थ पर्यावरण से ही अच्छे रंग मिलते हैं
- जरूरत से ज्यादा तोड़ने से क्या नुकसान होता है
- पौधों को सही तरीके से इकट्ठा करना सीखना
- गांव स्तर पर पर्यावरण की देखभाल की योजना बनाना
- रंग बनाने में “परिपत्र अर्थव्यवस्था” यानी बार-बार उपयोग का तरीका अपनाना

पर्यावरण (इकोसिस्टम) क्या होता है?

पर्यावरण वह जगह है जहाँ पौधे, जानवर, कीड़े-मकोड़े और इंसान मिट्टी, पानी, हवा और मौसम के साथ मिलकर रहते हैं।

गढ़वाल हिमालय में मुख्य पर्यावरण क्षेत्र हैं:

- उपोष्णकटिबंधीय जंगल
- बांज और देवदार के जंगल
- ऊँचाई वाले घास के मैदान (बुग्याल)
- नदी किनारे का क्षेत्र

ये सभी रंग बनाने के लिए जरूरी संसाधन देते हैं।

जंगल के मुख्य भाग

- **पौधे** – जैसे रंग देने वाले पौधे (दारूहल्दी, मजीठ आदि)
- **जानवर और पक्षी**
- **कीड़े और जीवाणु**
- **मिट्टी, पानी, धूप और मौसम**

अगर इनमें से कोई एक हिस्सा खराब हो जाए, तो पूरा तंत्र कमजोर हो जाता है।

प्राकृतिक रंगों के लिए स्वस्थ पर्यावरण क्यों जरूरी है?

अगर जंगल स्वस्थ रहेंगे तो:

- रंग देने वाले पौधे लगातार मिलते रहेंगे
- रंग की गुणवत्ता अच्छी होगी
- रंगाई के लिए पानी उपलब्ध रहेगा
- मिट्टी का कटाव कम होगा
- मौसम के बदलाव का असर कम होगा

अगर जरूरत से ज्यादा पौधे तोड़े गए तो:

- पौधे खत्म हो सकते हैं
- जैव विविधता घटेगी
- रंग की गुणवत्ता खराब होगी
- भविष्य में आर्थिक नुकसान होगा

पर्यावरण को खतरे

गढ़वाल क्षेत्र में मुख्य समस्याएँ:

- लैंटाना जैसे बाहरी (आक्रामक) पौधों का फैलना
- जंगल में आग
- ज्यादा मात्रा में जड़ी-बूटी और रंग वाले पौधों का तोड़ना
- मिट्टी का कटाव

- मौसम में बदलाव

लैंटाना जैसे पौधे स्थानीय पौधों को बढ़ने नहीं देते।

रासायनिक रंगों से नुकसान

- पानी प्रदूषित होता है
- जहरीला कचरा निकलता है
- मिट्टी खराब होती है
- कार्बन उत्सर्जन ज्यादा होता है

प्राकृतिक रंग इन नुकसानों को कम करते हैं।

सही तरीके से पौधे इकट्ठा करना (सतत संग्रह)

सतत संग्रह क्या है?

ऐसा संग्रह जिससे:

- पौधे हमेशा के लिए खत्म न हों
- वे दोबारा उग सकें
- जंगल का संतुलन बना रहे
- मिट्टी और पानी सुरक्षित रहें

सामान्य नियम

- पूरे पौधे को जड़ सहित न उखाड़ें (जब तक जरूरी न हो)
- केवल पके हुए हिस्से लें
- कम से कम 30–40% पौधा छोड़ दें
- हर बार एक ही जगह से न तोड़ें
- फूल और बीज बनने के समय पौधे न तोड़ें
- तेज औजार का इस्तेमाल करें ताकि पौधे को कम नुकसान हो

स्थानीय पौधों के लिए सावधानी (जैसे मजीठ)

- पूरी जड़ न निकालें
- कुछ हिस्सा जमीन में रहने दें ताकि फिर से उग सके
- ढलान वाली जगह से कम तोड़ें ताकि मिट्टी न बहे

आक्रामक पौधे (जैसे लैंटाना)

इनको ज्यादा मात्रा में हटाया जा सकता है, लेकिन सावधानी जरूरी है:

- बीज बनने से पहले काटें
- मिट्टी ज्यादा न खोदें
- जहां से हटाएँ, वहां स्थानीय पौधे लगाएँ
- वन विभाग के नियमों का पालन करें

पौधे तोड़ने के बाद जिम्मेदारी

सिर्फ पौधे लेना ही काम नहीं है, इसके बाद भी ध्यान रखना जरूरी है:

- स्थानीय पौधे दोबारा लगाना
- खुली मिट्टी को सुरक्षित करना
- बचे हुए पौधों का कम्पोस्ट बनाना
- रंग बनाते समय कम पानी का उपयोग
- कचरे का सही निपटान

गांव स्तर पर योजना बनाना

गांव के लोग मिलकर एक सरल योजना बना सकते हैं:

- कहाँ-कहाँ रंग वाले पौधे हैं, उसका नक्शा बनाना
- आक्रामक पौधों की जगह पहचानना
- कितनी मात्रा में तोड़ना है, तय करना
- निगरानी की जिम्मेदारी बांटना

- जहां नुकसान हुआ है, वहां सुधार करना

इससे सभी लोगों में जिम्मेदारी की भावना आती है।

रंग उत्पादन में परिपत्र तरीका अपनाना

- आक्रामक पौधों को आय का साधन बनाना
- अनार के छिलके, प्याज के छिलके जैसे कृषि कचरे का उपयोग
- रंग वाले पानी को दोबारा इस्तेमाल करना
- बचे पौधों से खाद बनाना
- बिना कचरे वाली रंगाई की कोशिश करना

इससे पर्यावरण भी सुरक्षित रहेगा और आय भी बनी रहेगी।